www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

लाइम गठिया

के संस्करण 2016

1. लाइम गठिया क्या है

1.1 यह क्या होता है?

यह बीमारी बोर्रेलिया बुर्गडोरफेर्री (लाइम बोर्रेलिओसिस) नामक कीटाणु से होती है,यह कीटाणु टिक के काटने से फैलता है,जिसमे से एक टिक एक्सोडस रीसेनस है।
इस बीमारी में जोड़ खास तौर से प्रभावित होते हैं,व् त्वचा,हृदय,आँखें,केंद्रीय मज्जा तंत्र व् अन्य अंगों पर भी इस का प्रभाव पड़ सकता है।त्वचा पर टिक के काटने की जगह पर फैलने वाली लाली आ जाती है जिसे एरिथिमा माइग्रेन्स कहते हैं।
कुछ लोगों में यदि इस का इलाज नहीं किया जाये तब यह केंद्रीय मज्जा तंत्र को भी प्रभावित कर सकती है।

1.2 यह बीमारी कितनी आम है?

बहुत कम बच्चों में लाइम गठिया देखा जाता है। यूरोप में कीटाणु के काटने से होनी वाले सभी गठिया रोगों में यह सबसे ज्यादा देखा जाता है ख़ास कर बच्चों व् किशोरों में।यह आमतौर से ४ वर्षा की आयु के बाद ही देखा जाता है इसीलिए यह बीमारी अधिकतर स्कूल जाते बच्चों में देखी जाती है।
यह बीमारी पूरे यूरोप में देखी जाती है पर मध्य यूरोप व् बाल्टिक सागर के पास दक्षिणी स्कैंडेनेविया में अधिक देखी जाती है। वातावरण के तापमान व् उमस के अनुसार प्रभावित टिक के काटने का समय अप्रैल से अक्टूबर तक प्राय: देखा जाता है व् इसी समय इस बीमारी का संक्रमण अधिक होता है।यह बीमारी किसी भी समय आरम्भ हो सकती है क्योंकि टिक के काटने व् जोड़ में सूजन आने के बीच में थोड़ा समय लगता है।

1.3. यह बीमारी किन कारणों से होती है?

यह बीमारी बोर्रेलिया बुर्गदोर्रफेर्री नमक एक कीटाणु के संक्रमण से होती है।यह कीटाणु एक्सोडस रसिनिस नमक एक टिक के काटने के द्वारा संक्रमित होता है। प्रत्येक टिक इस कीटाणु के द्वारा संक्रमित नहीं होती है.इसलिए प्रत्येक टिक के काटने से यह बीमारी नहीं

होती।कई बार टकि के काटने से सरि्फ लाली आ जाती है जसि एरथिमा माइग्रेन्स कहते हैं।कई बार बीमारी इस के आगे नहीं बढ़ती।ऐसा खास तौर पर तब भी होता है जब पहले ही चरण में एंटीबायोटकि दवाओं के द्वारा इलाज कर दयिा जाता है।इसीलएि हालाँकि एरथिमा माइग्रेन्स १ में १००० बच्चों में देखा जा सकता पर इसके द्वारा होने वाला लाइम गठयिा, जो आखरिी चरण में होता है,बहुत कम बच्चों में देखा जाता है।

1.4 क्या यह एक अनुवांशकि रोग है?

लाइम गठयिा एक संक्रामक रोग है,अनुवांशकि नहीं।कभी कभी ऐसा रोग देखने में आता है जसिमे अंटोबॉयोटकि दवाएं काम नहीं करती।इसमें कुछ अनुवांशकि तत्वों के कारणवश ऐसा हो सकता है पर इस वषिय में पूरी जानकारी अभी नहीं है।

1.5 मेरे बच्चे को यह बीमारी क्यों हुई?क्या इससे बचाव कयिा जा सकता है?

जनि यूरोपयिन जगहों पर यह टकि पायी जाती है,वहां इस की रोकथाम कर पाना अत्यन्य कठनि है।कीटाणु को टकि के अंदर जा कर थूक की ग्रंथि तक पहुँचने में समय लगता है,यदि टकि उससे पहले काट ले तब यह कीटाणु संक्रमति नहीं हो पाता।टकि मानव शरीर पर चपिक जाती है व् ३-४ दनि तक मानव का खून चूसती है।यदि बच्चों को गर्मी के मौसम में रोज़ ठीक से देखा जाये व् टकि को खोज कर नकिल दयिा जाये तब इस बीमारी के होना का खतरा काफी कम हो जाता है।रोकथाम के लएि एंटीबायोटकि दवाओं का प्रयोग करना ठीक नहीं है।
हालाँकि जब एरथिमा माइग्रेन्स होता है तब उसका इलाज एंटीबायोटकि दवाओं के द्वारा तुरंत कयिा जाना चाहएि।इससे कीटाणु आगे पनप नहीं पायेगा व् लाइम गठयिा नहीं होगा।अमेरकिा में इसके संक्रमण को रोकने के कयि टीकाकरण शुरू कयिा गया था परंतु अधकि कीमत होने के कारन उसको वापसि ले लयिा गया।कीटाणु के प्रकार में भनि्नता होने के कारन यह टीकाकरण यूरोप में कामयाब नहीं था।

1.6 क्या यह छूत की बीमारी है?

हालाँकि यह एक संक्रामक रोग है पर यह छूत की बीमारी नहीं है(मतलब यह एक मनुष्य से दूसरे को नहीं हो सकती)क्योंकि यह कीटाणु सरि्फ टकि के द्वारा कटे जाने पर ही मनुष्य के शरीर में पहुचता है।

1.7 इसके प्रमुख लक्षण क्या है?

इस बीमारी के प्रमुख लक्षण जोड़ में सूजन व् प्रभावति जोड़ की हलिने की क्षमता में कमी आना होती है।कई बार जोड़ में सूजन बहुत अधकि होती है परंतु दर्द इतना अधकि नहीं होता।खुटने में सबसे अधकि प्रबहव देखा जाता है,हालाँकि अन्य बडे जोड़ों में भी इसका प्रभाव देखा जाता है,पर ऐसा बहुत कम होता है की घुटनो में कोई सूजन न हो।२/३ लोगों में अकेली एक ही घुटने की सूजन पाई जाती है।९५ % से अधकि लोगों में आम तौर से ४ जोड़ों से

कम जोड़ प्रभावित होते हैंऔर समय के साथ सिर्फ घुटने में प्रभाव रह जाता है।२/३ लोगों में रुक रुक कर आता है(गठिया अपने आप कुछ सप्ताह में चला जाता है व् कुछ अंतराल के बाद अपने आप ही वापिस आ जाता है)
समय के साथ जोड़ों में सूजन का क्रम कम होता जाता है व् एक जोड़ में सूजन की अवधि भी कम होती जाती है।पर कुछ लोगों में यह एक दीर्घकालीन गठिया का रूप ले लेता है।कुछ लोगों में यह रुक रुक कर आने की जगह एक की जोड़ में तीन माह से अधिक अवधि के लिये आ जाता है।

1.8 क्या प्रत्येक बच्चे को एक सी बीमारी होती है?
नहीं।यह बीमारी तीव्र हो सकती है(एक ही बार तीव्र गठिया होना),रुक रुक कर आने वाली हो सकती है अथवा दीर्घकालीन हो सकती है।अधिकितर ऐसा देखा गया है की छोटे बच्चों में यह बीमारी तीव्र होती है व् किशोरों में अधिकाँश दीर्घकालीन होती है।

1.9 क्या बच्चों में यह बीमारी वयस्कों से भिन्न होती है?
बच्चों व् वयस्कों में एक सी ही बीमारी देखि जाती है।हालाँकि बच्चों में गठिया होने की सम्भावना अधिक होती है।परंतु छोटी आयु के बच्चों में बीमारी तीव्रता से आती है व् दवाओं का असर ज़्यादा जल्दी और सफल होता है।